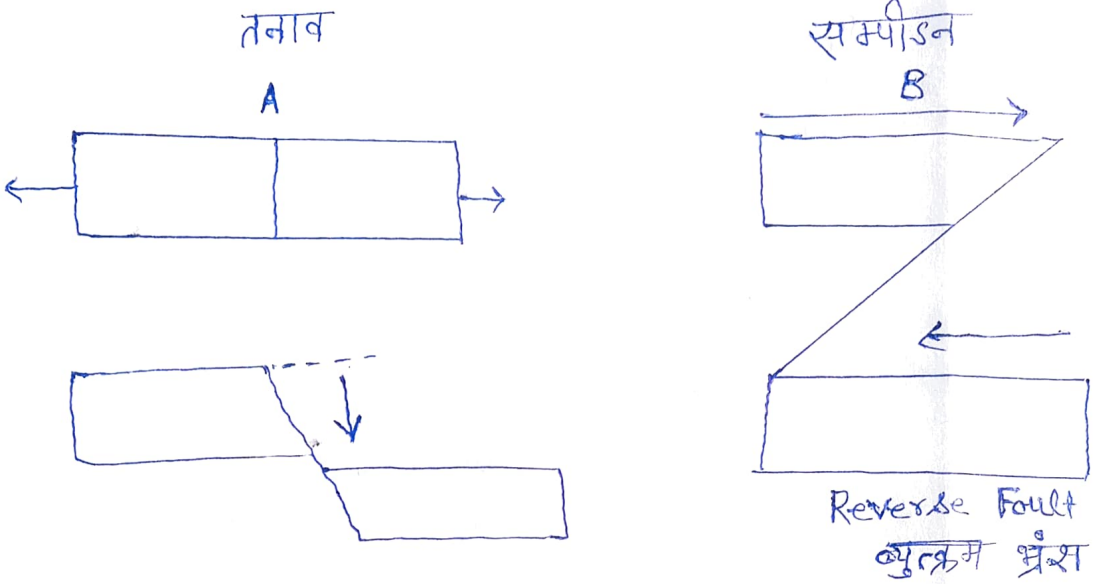


Normal and reverse faults

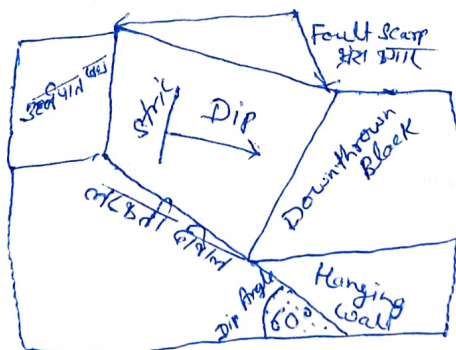
(सामान्य तथा व्युत्क्रम भ्रंश)

by dharmesh nanda



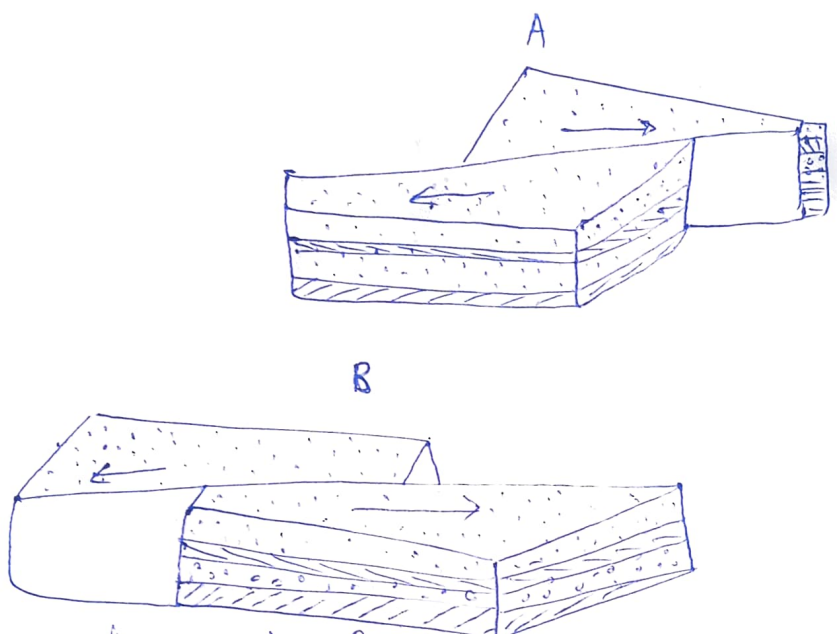
तनावमूलक संचलन की तीव्रता के कारण जब भूपटल में एक तल (Plane) के सहारे चट्टानों का स्थानान्तरण हो जाता है, तो उस तल के संचलन को 'भ्रंश' कहते हैं। जिस तल के सहारे भूपटल की चट्टानों में खंडों का स्थानान्तरण होता है।

विभंग तल (fault plane) वह सतह होती है, जिसके सहारे संचलन होने से चट्टानों का स्थानान्तरण होता है। भ्रंश तथा विभंग तल के नीचे के कोण को 'विभंग तल की नति' (fault dip) कहते हैं। भ्रंश तल के दूसरी ओर के खण्ड की अपेक्षा ऊपरी भाग की उत्क्षेपित खण्ड (upthrown side) कहा जाता है। उपर उठे खण्ड की अपेक्षा निचले खण्ड को अधःक्षेपित खण्ड (downthrown side) कहते हैं। भ्रंश के उपरी दीवाल को शीर्ष भित्ति (hanging wall) कहते हैं। भ्रंश की निचली दीवाल को पाद भित्ति (foot wall) कहते हैं। भ्रंश के कारण स्थलीय सतह पर निर्मित खाई दाल वाले किनारे को 'भ्रंश छगार' कहते हैं। सामान्य भ्रंश द्वारा निर्मित खाई दाल वाले छगार को प्रायः भ्रंश छगार (fault scarp) कहा जाता है।



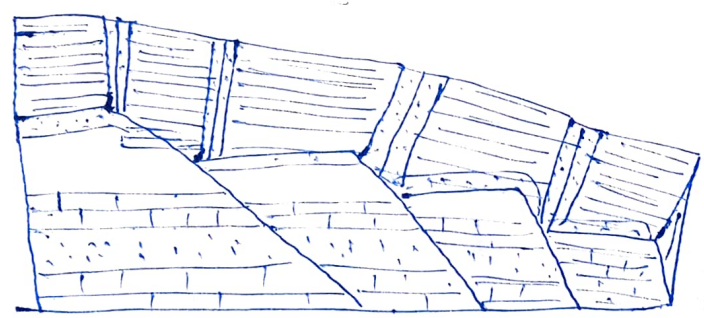
जब चट्टानों में दबाव पड़ने से चट्टान के दोनों खण्ड आमने-सामने खिसकते हैं तो निर्मित भ्रंश को 'ल्युक्रम भ्रंश' कहते हैं। इस तरह के भ्रंश में चट्टान का खण्ड दूसरे पर चढ़ जाता है। इस क्रिया को ल्युक्रम कहा जाता है। ल्युक्रम भ्रंश का निर्माण मुख्य रूप से क्षैतिज संचलन के द्वारा उत्पन्न संपीड़न द्वारा ही होता है।

पार्श्वीय या नतिलम्बी भ्रंश (Lateral fault/Strike slip) जिसमें क्षैतिज दिशा में संचलन होने से जब भ्रंश तल के लंबवत क्षैतिज गति होती है तो नतिलम्बी भ्रंश कहते हैं।



चित्र: नतिलम्बी सर्पण भ्रंश

सोपानी भ्रंश (Step fault) ⇒ जब किसी अंश में कई भ्रंशों का इस तरह निर्माण होता है कि सभी भ्रंश तल (fault plane) के द्वारा एक ही दिशा में हों तो उसे सोपानी या सीढ़ीदार भ्रंश कहते हैं। इस तरह के भ्रंश के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि भ्रंश द्वारा अघ: संपीड़न एवं आघातमान एक ही दिशा में हों।



चित्र: सोपानाकार भ्रंश (Step fault)